

[23/09/20, 12:20:24 PM] Rajneesh Sharma: Take a look at this video on YouTube:

<https://youtu.be/Ap53idrpM6s>

[23/09/20, 12:20:24 PM] Rajneesh Sharma: ग्नि सूक्त(ऋग्वेद संहिता १.१.१)

[ऋषि मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । देवता अग्नि । छंद गायत्री।]

१. ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम होतारं रत्नधातमम् ॥१॥

I glorify Agni, the high priest of sacrifice, the divine, the ministrant, who is the offerer and possessor of greatest wealth.

हम अग्निदेव की स्तुती करते हैं (कैसे अग्निदेव?) जो यज्ञ (श्रेष्ठतम पारमार्थिक कर्म) के पुरोहित (आगे बढ़ाने वाले), देवता (अनुदान देनेवाले), ऋत्विज( समयानुकूल यज्ञ का सम्पादन करनेवाले), होता (देवों का आवाहन करनेवाले) और याचको को रत्नों से (यज्ञ के लाभों से) विभूषित करने वाले हैं ॥१॥

२. अग्नि पूर्वभिऋषिभिरिड्यो नूतनैरुत । स देवाँ एह वक्षति ॥२॥

May that Agni, who is worthy to be praised by ancient and modern sages, gather the Gods here.

जो अग्निदेव पूर्वकालिन ऋषियो (भृगु, अंगिरादि) द्वारा प्रशंसित हैं। जो आधुनिक काल में भी ऋषि कल्प वेदज्ञ विद्वानों द्वारा स्तुत्य हैं, वे अग्निदेव इस यज्ञ में देवों का आवाहन करें ॥२॥

३. अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम् ॥३॥

Through Agni, one gets lot of wealth that increases day by day. One gets fame and the best progeny.

(स्तोता द्वारा स्तुति किये जाने पर) ये बढ़ाने वाले अग्निदेव मनुष्यो (यजमानों) को प्रतिदिन विवर्धमान (बढ़ने वाला) धन, यश एवं पुत्र-पौत्रादि वीर पुरुष प्रदान करनेवाले हैं ॥३॥

४. अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि। स इद्देवेषु गच्छति ॥४॥

O Agni, you are surrounding the non-violent sacrifice on all sides, that which indeed reaches (in) the gods.

हे अग्निदेव। आप सबका रक्षण करने मे समर्थ है। आप जिस अध्वर (हिंसारहित यज्ञ) को सभी ओर से आवृत किये रहते है, वही यज्ञ देवताओं तक पहुंचता है ॥४॥

५. अग्निहोर्ता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः । देवि देवेभिरा गमत् ॥५॥

May Agni, the sacrificer, one who possesses immense wisdom, he who is true, has most distinguished fame, is divine, come hither with the gods.

हे अग्निदेव। आप हवि प्रदाता, ज्ञान और कर्म की संयुक्त शक्ति के प्रेरक, सत्यरूप एवं विलक्षण रूप युक्त है। आप देवों के साथ इस यज्ञ मे पधारें ॥५॥

६. यदग्द दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेत्तत् सत्यमग्दिरः ॥६॥

O Agni, whatever good you will do and whatever possessions you bestow (upon the worshipper), that, O Angiras, is indeed your essence.

हे अग्निदेव। आप यज्ञकरने वाले यजमान का धन, आवास, संतान एवं पशुओं की समृद्धि करके जो भी कल्याण करते है, वह भविष्य के किये जाने वाले यज्ञों के माध्यम से आपको ही प्राप्त होता है॥६॥

७. उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि॥७॥

O Agni, the illuminer (dispeller) of darkness, we approach near thee (thy vicinity) with thought (willingness), day by day, while bearing obeisance.

हे जाज्वलयमान अग्निदेव । हम आपके सच्चे उपासक है। श्रेष्ठ बुद्धि द्वारा आपकी स्तुति करते है और दिन रात, आपका सतत गुणगान करते हैं। हे देव। हमे आपका सान्निध्य प्राप्त हो ॥७॥

८. राजन्तमध्वराणां गोपांमृतस्य दीदिविम् । वर्धमानं स्वे दमे ॥८॥

(We approach) Thee, the shining (the radiant), the protector of noninjuring sacrifices, growing in your own dwelling, the bright star of truth.

हम गृहस्थ लोग दिष्टिमान, यज्ञो के रक्षक, सत्यवचनरूप व्रत को आलोकित करने वाले, यज्ञस्थल मे वृद्धि को प्राप्त करने वाले अग्निदेव के निकट स्तुतिपूर्वक आते हैं ॥८॥

९. स नः पितेव सूनवेग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ॥९॥

O Agni, be easily accesible to us, like a father to his son. Accompany us for our well being.

हे गार्हपत्य अग्ने ! जिस प्रकार पुत्र को पिता (बिना बाधा के) सहज की प्राप्त होता है, उसी प्रकार आप भी (हम यजमानो के लिये) बाधारहित होकर सुखपूर्वक प्राप्त हों। आप हमारे कल्याण के लिये हमारे निकट रहे ॥९॥